

V. वित्तीय बाजार

वैश्विक वित्तीय बाजारों में जोखिम के आकलन में, फोकस सरकारी ऋण संकट से हटकर आर्थिक सुधार में मंदी संबंधी चिंताओं पर आ गया। वैश्विक निवेशकों की जोखिम के आकलन में इस बदलाव ने दो विभिन्न माध्यमों, नामतः भारतीय रुपए की मूल्यवृद्धि और संविभागीय प्रवाहों में तेज वृद्धि के कारण इक्विटी मूल्यों में वृद्धि के माध्यम से भारतीय वित्तीय बाजार प्रभावित हुए। उच्च नीतिगत ब्याज दरों का अंतरण प्रभावी होता गया हालांकि उसमें कुछ अंतराल था। कम चलनिधि की स्थिति ने वित्तीय बाजारों के विभिन्न घटकों, नामतः सीपी, सीडी, सीबीएलओ, खजाना बिल, सरकारी प्रतिभूति और बैंक जमाराशि को प्रभावित किया। कंपनियों द्वारा वित्त के वैकल्पिक स्रोतों की खोज के कारण आधार दर की बाद की स्थिति में सीपी बाजार में गतिविधियां बढ़ गईं। प्रमुख शहरों में आवासों के मूल्यों में तेजी की प्रवृत्ति देखी गई।

V.1 सुधार में मंदी संबंधी पुनः उभरी चिंताओं से निवेशक विश्वास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने पर यूरो क्षेत्र में सरकारी ऋण संकट और बैंकिंग क्षेत्र पर उसके संभाव्य प्रभाव से संबंधित अनिश्चितताओं में उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में वित्तीय बाजारों में मूल्य बढ़ने लगे। किंतु, उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं (ईएमई) में वित्तीय बाजारों ने और मजबूती के चिह्न दर्शाए जिसका मुख्य कारण उन्नत अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में उनकी मजबूत वृद्धि संभावना था। परिणामस्वरूप, ईएमई में पूंजी प्रवाह बढ़ गए जिससे मुद्राओं पर मूल्यवृद्धि का और आस्ति मूल्यों में ऊंचे बने रहने का दबाव आ गया। अमरीकी डॉलर का अधिकांश प्रमुख मुद्राओं,

और मुख्य रूप से जापानी येन के प्रति मूल्यहास हुआ। मुद्रा बाजार गतिशील बने रहे और उन पर बढ़ती विनिमय दर की लागत से निपटने के लिए देश विशेष के नीतिगत प्रतिसादों संबंधी अपेक्षाओं पर आधारित अधिक बाजार ध्यान दिया गया।

V.2 भारतीय वित्तीय बाजार सामान्यतः स्थिर बने रहे जिसमें दायराबद्ध पण्यवर्त था और अस्थिरता में कमी आई थी। मांग दरें नीतिगत दरों और कम चलनिधि की स्थिति के अनुरूप क्रमिक रूप से बढ़ गईं। अस्थिरता नियंत्रित रखने की दृष्टि से एलएएफ दायरा कम किया गया। नीतिगत दरों में लगातार वृद्धि को ध्यान में रखते हुए उधारदाताओं (सीडी के माध्यम से) और उधार लेने वालों (सीपी के माध्यम से) ने सस्ती निधि पर बल देने के कारण सीपी और सीडी दोनों बाजारों से अधिक निर्गम हुआ। सरकारी प्रतिभूति बाजार में आय 2010-11 की दूसरी तिमाही में बढ़ गई जो कि नीतिगत दरों में वृद्धि, कम चलनिधि की स्थिति और उच्च मुद्रास्फीति दर्शाती है। उसके बाद, चलनिधि की स्थिति में सुधार होने और यूरो क्षेत्र संबंधी चिंता कम होने के कारण आय घट गई। भारतीय रुपए की अमरीकी डॉलर के प्रति मूल्यवृद्धि हुई और भारतीय स्टॉक मूल्य व्यापक संविभागीय अंतर्वाहों के कारण बढ़ गए। रिजर्व बैंक का तिमाही गृह मूल्य सूचकांक दर्शाता है कि आवास बाजार में मूल्य, विशेष रूप से टीयर I शहरों में मूल्य बढ़ते रहे यहां तक कि टीयर II शहरों में मूल्यों में कुछ सुधार हुआ था।

अंतरराष्ट्रीय वित्तीय बाजार

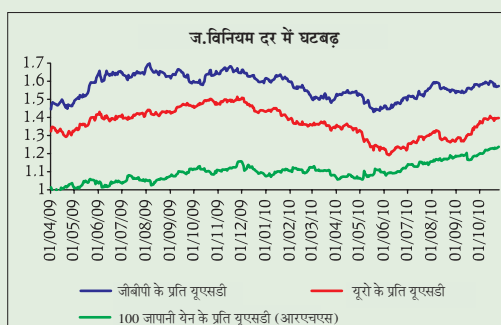
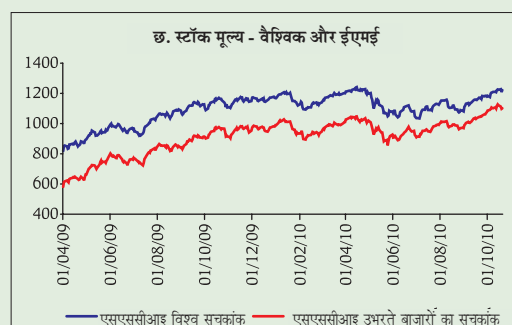
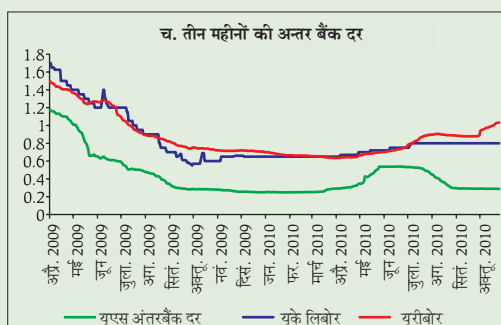
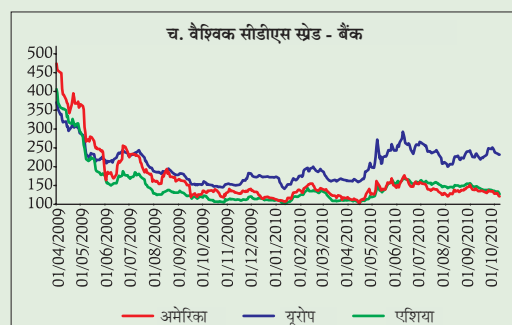
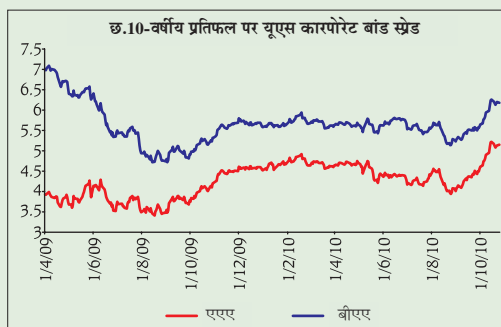
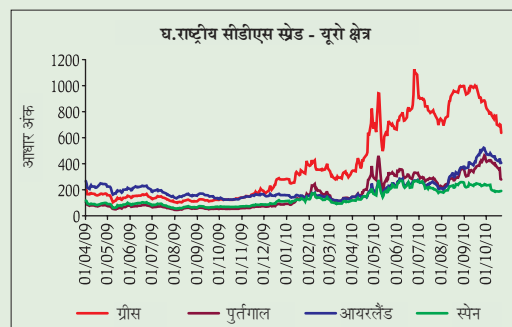
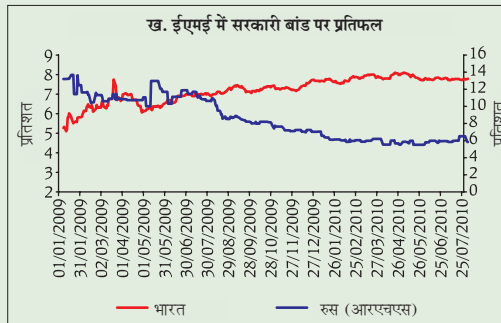
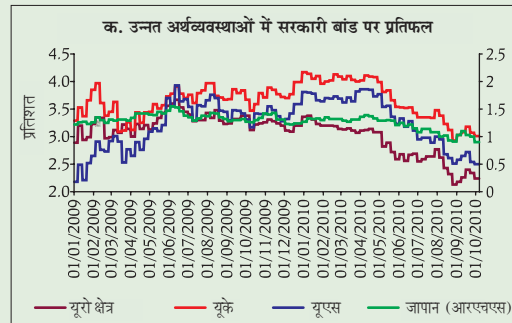
V.3 सरकारी ऋण संकट संबंधी चिंता, जिसने 2009 के अंत से वैश्विक वित्तीय बाजार स्थिति पर

प्रतिकूल प्रभाव डाला था, 2010 की तीसरी तिमाही से काफी कम होने लगी। किंतु, जुलाई के अंत तक वैश्विक वृद्धि की संभावना संबंधी चिंता और आस्ति मूल्यों पर उसके प्रभाव केंद्र में आ गया। अमरीका और अन्य उन्नत देशों में आर्थिक सुधार मंद होने के बढ़ते चिह्नों से मुद्रास्फीति की आकांक्षा कम हुई और बांड आय में कमी आई (चार्ट V.1क)। कंपनी बांड आय और सरकारी प्रतिभूति आय के बीच अंतर बढ़ गया, विशेष रूप से सितंबर 2010 के बाद (चार्ट V.1घ)। अमरीका और अन्य उन्नत देशों में मंदी संबंधी बढ़ती चिंता के चलते अमरीकी डॉलर का अधिकांश प्रमुख मुद्राओं, और मुख्य रूप से जापानी येन के प्रति मूल्यहास हुआ (चार्ट V.1ज)।

V.4 ईएमई में आस्ति मूल्यों में काफी वृद्धि हुई क्योंकि इन देशों में बेहतर प्रतिलाभों की संभावना के चलते इन अर्थव्यवस्थाओं में संविभागीय प्रवाह पुनः बढ़ गए। उनकी मुद्राओं पर भी मूल्यवृद्धि का दबाव देखा गया (सारणी V.1)।

V.5 वैश्विक वित्तीय बाजारों का असर भारतीय बाजारों, विशेष रूप से इक्विटी और विदेशी मुद्रा बाजारों तक पहुंच गया। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में वृद्धि की संभावना बिगड़ने से पूंजी अंतर्वाह बढ़ गए जिसमें एफआइआइ आगे थे। इससे स्टॉक मूल्यों में काफी वृद्धि हुई और अमरीकी डॉलर के प्रति रुपए की विनिमय दर भी बढ़ी। वैश्विक कर्ज बाजार की स्थिति में सुधार और ब्याज दर विभेद में वृद्धि से कंपनियों की ईसीबी में पहुंच बढ़ गई। भारत में वित्तीय बाजार वैश्विक प्रवृत्ति दर्शाने के अलावा देशी वृद्धि-मुद्रास्फीति संभावना, मौद्रिक नीति रुझान और राजकोषीय स्थिति से प्रभावित थे।

चार्ट V.1: वैश्विक वित्तीय बाजारों की गतिविधियों के संकेतक



स्रोत : आइएमएफ, दि फेडरल रिजर्व ऑफ सेंट लुईस, दि ब्लूमबर्ग तथा दि डेटास्ट्रीम

सारणी V.1: उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं में मुद्रा तथा स्टॉक की कीमतों में परिवर्तन

(प्रतिशत)							
मर्चे	मार्च 2009 के अंत में @	मार्च 2010 के अंत में @	अक्टूबर 2010 के अंत में *	मर्चे	मार्च 2009 के अंत में @	मार्च 2010 के अंत में @	27 अक्टूबर 2010 के अंत में *
1	2	3	4	1	2	3	4
अमरीकी डॉलर के मूल्य में वृद्धि (+) / गिरावट (-)				स्टॉक की कीमतों में घट-बढ़			
अर्जेन्टाइन पेसो	-14.8	-4.2	-2.0	ब्राजील (बोवेसा)	-32.9	71.9	0.3
ब्राजीलियन रिअल	-23.8	24.6	5.4	चीन (संघाई एक्सई कंपोजिट)	-31.7	31.0	-3.6
चीनी युआन	2.7	0.14	2.0	भारत (बीएसई सेंसेक्स)	-37.9	80.5	14.5
भारतीय रुपया	-21.6	12.9	1.4	इंडोनेशिया (जकार्ता कंपोजिट)	-41.4	93.7	30.5
इंडोनेशियाई रुपैयाह	-20.4	27.0	2.1	मलेशिया (केएलएसई कंपोजिट)	-30.1	51.3	13.5
जापानी येन	2.0	5.2	14.2	रूस (आरटीएस)	-66.4	128.0	0.7
मलेशियाई रिंगिट	-12.6	11.4	5.3	सिंगापुर (स्ट्रेट टाइम्स)	-43.5	69.9	8.2
मेक्सिकन पेसो	-24.8	14.0	-0.5	दक्षिण कोरिया (कोस्पी)	-29.2	40.3	12.8
रूसी रूबल	-30.7	14.9	-3.5	ताइवान (ताइवान इंडेक्स)	-39.2	52.0	4.7
द. कोरियाई वॉन	-28.0	21.7	1.2	थाईलैंड (सेट कंपोजिट)	-47.2	82.6	24.9
थाई बाथ	-11.4	9.8	7.9				
तुर्की लीरा	-21.7	10.1	-3.2				

@: साल-दर-साल घटबढ़ * मार्च के अंत की तुलना में घटबढ़
स्रोत: ब्लूमबर्ग, आइएफएस, आइएमएफ।

देशी वित्तीय बाजार

V.6 मजबूत देशी समष्टिआर्थिक मूल तत्व और उच्च वृद्धि बनी रहने की आशा से बाजारों को आवश्यक सुगमता प्राप्त हुई। बाजारों में लेनदेन मूल्य दायरा-बद्ध बने रहे हालांकि विस्तार/अस्थिरता में सामान्य कमी आई थी (सारणी V.2 और चार्ट V.2)।

मुद्रा बाजार

V.7 मुद्रा बाजार 2010-11 की दूसरी तिमाही के दौरान अनुकूल बना रहा। मांग दर मजबूत हुई और कार्य मई 2010 के अंत से शुरू हुआ जिसका कारण 3जी/बीडब्ल्यूए नीलामी और अग्रिम कर भुगतान के कारण चलनिधि की स्थिति कड़ी हो जाना था। केंद्र

सरकार के उच्च नकदी शेषों के कारण कम चलनिधि की स्थिति बनी रहने से मांग दर जुलाई 2010 तक एलएएफ के ऊपरी दायरे में बनी रही। चलनिधि की स्थिति में सुगमता आने से अगस्त के अंत से सितंबर के प्रारंभ में मांग दर कम हुई। उच्च नीतिगत ब्याज दरों के अंतरण का प्रभाव बढ़ते जाने से और चलनिधि की स्थिति कड़ी हो जाने से मांग दर सितंबर 2010 के मध्य से पुनः बढ़ गई और अनौपचारिक एलएएफ दायरे की उच्च सीमा से आगे निकल गई। मांग दर की अस्थिरता को रोकने की दृष्टि से जुलाई 2010 से एलएएफ दायरा दो चरणों में 150 आधार अंक से कम करके 100 आधार अंक किया गया (चार्ट V.3)। अक्टूबर 2010 के दौरान मांग दर अनौपचारिक दायरे के आसपास बनी रही।

सारणी V.2: देशी वित्तीय बाजार - एक नजर में													
वर्ष/ माह	मांग मुद्रा बाजार		सरकारी प्रतिभूतियां बाजार		विदेशी मुद्रा बाजार			चलनिधि प्रबंधन		इक्विटी बाजार			
	दैनिक पण्यवर्त (कोरोड़ रुपए)	मांग दर* (प्रतिशत)	दैनिक पण्यवर्त (कोरोड़ रुपए)+	10 वर्षीय प्रतिलाभ @ (प्रतिशत)	दैनिक अंतर बैंक पण्यवर्त (मिलियन अमरीकी डॉ.)	विनिमय दर (रु. प्रति अमरीकी डॉ.)	रिजर्व बैंक को निवल विदेशी मुद्रा खरीद (+)/ बिक्री (-)	एमएसएस बकाया # (कोरोड़ रुपए)	औसत दैनिक एलएएफे (कोरोड़ रुपए)	बीएसई में दैनिक पण्यवर्त (कोरोड़ रुपए)	एनएसई में दैनिक पण्यवर्त (कोरोड़ रुपए)	बीएसई सेंसेक्स**	सीएनएस निफ्टी**
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
2008-09	22,436	7.06	10,879	7.54	34,812	45.92	-34,922†	1,48,889	2,885	4,498	11,325	12303	3713
2009-10	15,924	3.24	14,426	7.23	30,107	44.95	-2,635†	23,914	1,00,015	5,651	16,959	15585	4658
अप्रै-09	21,820	3.28	15,997	6.55	27,796	50.06	-2,487	75,146	1,01,561	5,232	15,688	10911	3360
मई-09	19,037	3.17	14,585	6.41	32,227	48.53	-1,437	45,955	1,25,728	6,427	19,128	13046	3958
जून-09	17,921	3.21	14,575	6.83	32,431	47.77	1,044	27,140	1,23,400	7,236	21,928	14782	4436
जुला-09	14,394	3.21	17,739	7.01	30,638	48.48	-55	22,159	1,30,891	6,043	18,528	14635	4343
अग-09	15,137	3.22	9,699	7.18	27,306	48.34	181	19,804	1,28,275	5,825	17,379	14415	4571
सितं-09	16,118	3.31	16,988	7.25	27,824	48.44	80	18,773	1,21,083	6,211	18,253	16338	4859
अक्तू-09	15,776	3.17	12,567	7.33	28,402	46.72	75	18,773	1,01,675	5,700	18,148	16826	4994
नव-09	13,516	3.19	17,281	7.33	27,599	46.57	-36	18,773	1,01,719	5,257	16,224	16684	4954
दिसं-09	13,302	3.24	14,110	7.57	27,439	46.63	0	18,773	68,522	4,671	13,948	17090	5100
जन-10	12,822	3.23	12,614	7.62	32,833	45.96	0	9,944	81,027	6,162	17,813	17260	5156
फर-10	13,618	3.17	12,535	7.79	34,040	46.33	0	7,737	78,661	4,125	12,257	16184	4840
मार्च-10	17,624	3.51	8,544	7.94	32,755	45.50	0	3,987	37,640	4,751	13,631	17303	5178
अप्रै-10	16,374	3.49	14,242	8.01	36,821	44.50	0	2,737	57,150	4,696	13,828	19679	5295
मई-10	16,786	3.83	24,225	7.56	40,243	45.81	0	922	32,798	3,940	12,937	16845	5053
जून-10	14,258	5.16	21,300	7.59	36,953	46.57	0	317	-47,347	4,204	13,005	17300	5188
जुला-10	18,954	5.54	13,691	7.69	33,978	46.84	0	254	-46,653	4,225	12,661	17848	5360
अग-10	15,916	5.17	16,919	7.93	36,193	46.57	-	0	-1,048	5,131	14,182	18177	5457
सितं-10	17,212	5.50	16,215	7.96	37,249	46.06	-	0	-24,155	5,185	15,708	19353	5811

* : दैनिक भारत मांग मुद्रा उधार दरों का औसत ^: केंद्र सरकार की दिनकित प्रतिभूतियों में दैनिक पूर्ण पण्यवर्त का औसत

@ : अंतिम दरों का औसत #: एमएसएस के साप्ताहिक बकाया का औसत **: दैनिक अंतिम सूचकांकों का औसत

† : वित्तीय वर्ष के लिए संचयी अ: अंतिम - : उपलब्ध नहीं

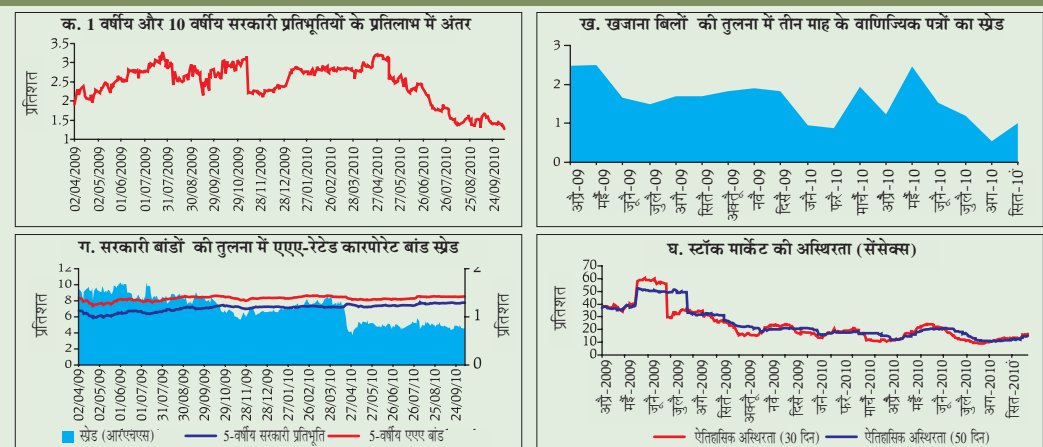
एलएएफे: चलनिधि समायोजन सुविधा एमएसएस : बाजार स्थिरीकरण योजना बीएसई : बंबई शेयर बाजार लि.

एनएसई : नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया लि.

टिप्पणी : स्तंभ 10 में (-) चलनिधि अंतर्वेशन को तथा (+) चलनिधि अवशोषण को सूचित करता है।

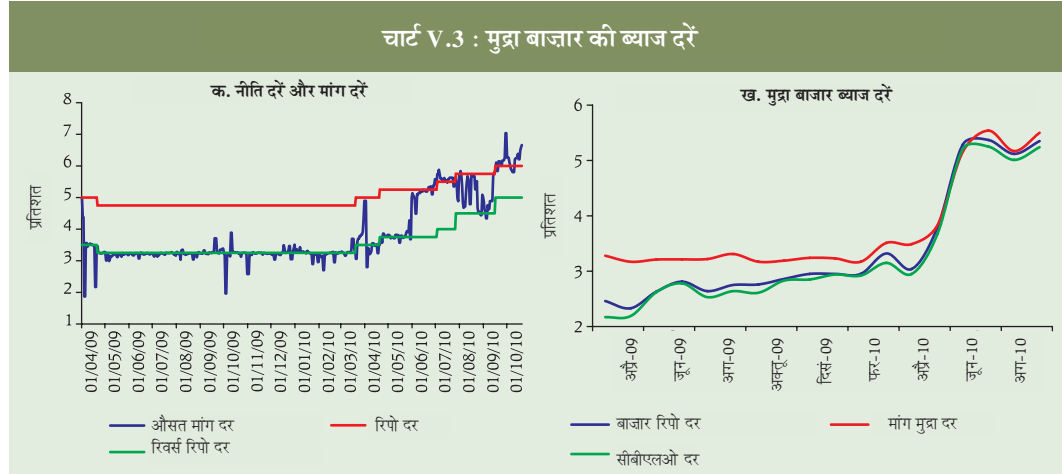
V.8 2010-11 की दूसरी तिमाही के दौरान हालांकि इससे कुछ कम थी। संपार्श्वीकृत उधार और संपार्श्वीकृत खंड में दरें मांग दरों के अनुरूप रही ऋणदायी बाध्यता (सीबीएलओ) और बाजार रिपो

चार्ट V.2 : देशी वित्तीय बाजारों में स्प्रेड और अस्थिरता



मौद्रिक नीति वक्तव्य
2010-11

समष्टिआर्थिक और
मौद्रिक गतिविधियां
दूसरी तिमाही की समीक्षा
2010-11



खंड इस अवधि के दौरान ऊंचे बने रहे जो सक्रिय बाजार की स्थिति दर्शाते हैं (सारणी V.3)। पिछली तिमाही जैसे ही, संपार्श्वीकृत खंड में प्रमुख उधारकर्ता

बैंक ही बने रहे जबकि पारस्परिक निधियां (एमएफ) इस खंड में प्रमुख उधारदाता बनी रही। संपार्श्वीकृत खंड में कुल उधार देने में एमएफ का हिस्सा अप्रैल-

सारणी V.3 : मुद्रा बाजार खंडों की गतिविधि

(करोड़ रुपर)

वर्ष / माह	औसत दैनिक मात्रा (एक चरण)					वाणिज्यिक पत्र			जमा प्रमाणपत्र	
	मांग	बाजार रिपो	सीबी एलओ	कुल (2 से 4)	मुद्रा बाजार दर (%)*	मीयादी मुद्रा	बकाया राशि	डब्ल्यू एडीआर (%)	बकाया राशि	डब्ल्यू एडीआर (%)
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
अप्रै-09	10,910	20,545	43,958	75,413	2.41	332	52,881	6.29	2,10,954	6.48
मई-09	9,518	22,449	48,505	80,472	2.34	338	60,740	5.75	2,18,437	6.20
जून-09	8,960	21,694	53,553	84,207	2.69	335	68,721	5.00	2,21,491	4.90
जुला-09	7,197	20,254	46,501	73,952	2.83	389	79,582	4.71	2,40,395	4.96
अग-09	7,569	23,305	57,099	87,973	2.62	461	83,026	5.05	2,32,522	4.91
सितं-09	8,059	27,978	62,388	98,425	2.73	381	79,228	5.04	2,16,691	5.30
अक्टू-09	7,888	23,444	58,313	89,645	2.70	225	98,835	5.06	2,27,227	4.70
नव-09	6,758	22,529	54,875	84,162	2.87	191	1,03,915	5.17	2,45,101	4.86
दिसं-09	6,651	20,500	55,338	82,489	2.91	289	90,305	5.40	2,48,440	4.92
जन-10	6,411	14,565	50,571	71,547	2.97	404	91,564	4.80	2,82,284	5.65
फर-10	6,809	19,821	63,645	90,275	2.95	151	97,000	4.99	3,09,390	6.15
मार्च-10	8,812	19,150	60,006	87,968	3.22	393	75,506	6.29	3,41,054	6.07
अप्रै-10	8,187	20,319	50,891	79,397	3.03	423	98,769	5.37	3,36,807	5.56
मई-10	8,393	17,610	42,274	68,277	3.72	330	1,09,039	6.85	3,40,343	5.17
जून-10	7,129	9,481	31,113	47,723	5.22	447	99,792	6.82	3,21,589	6.37
जुला-10	9,477	12,011	29,102	50,590	5.33	385	1,12,704	6.93	3,24,810	6.69
अग-10	7,958	15,553	45,181	68,692	5.05	281	1,26,549	7.32	3,41,616	7.17
सितं-10	8,606	15,927	53,223	77,756	5.29	617	1,12,003	7.82	3,37,322	7.34

सीबीएलओ : संपार्श्वीकृत उधार लेने और देने संबंधी दायित्व डब्ल्यूएडीआर : भारित औसत बट्टा दर
* : मांग, बाजार रिपो और सीबीएलओ की भारित औसत दर।

सारणी V.4: वाणिज्यिक पत्र - प्रमुख जारीकर्ता

(करोड़ रुपए)							
अवधि के अंत में	पट्टेदायी तथा वित्त		विनिर्माण		वित्तीय संस्थाएं		कुल बकाया 8 (=2+4+6)
	राशि	हिस्सा(%)	राशि	हिस्सा(%)	राशि	हिस्सा(%)	
1	2	3	4	5	6	7	
मार्च-09	27.183	62	12.738	29	4.250	10	44.171
जून-09	34.437	50	23.454	34	10.830	16	68.721
सितंबर-09	31.648	40	31.509	40	16.071	20	79.228
दिसंबर-09	36.027	40	42.443	47	11.835	13	90.305
मार्च-10	39.477	52	22.344	30	13.685	18	75.506
जून-10	42.572	43	43.330	43	13.890	14	99.792
सितंबर-10	58.098	52	40.486	36	13.420	12	1,12,003

मई 2010 के स्तर से जून-अगस्त 2010 के दौरान कम हो गया। मुद्रा बाजार का संपार्श्विकृत खंड लगातार प्रमुख खंड बना रहा जो कि 2010-11 की दूसरी तिमाही के दौरान कुल मात्रा में 80 प्रतिशत से अधिक था।

V.9 जमा प्रमाणपत्र (सीडी) का औसत पाक्षिक निर्गम पिछली तिमाही की तुलना में दूसरी तिमाही में अधिक बना रहा। सीडी का अधिक निर्गम जमा ब्याज दरों में वृद्धि शुरू होने से बैंकों द्वारा कम ब्याज दर पर व्यापक जमाराशियां जुटाने के प्रयास दर्शाता है। मुद्रा बाजार के अन्य खंडों में दरों की गतिविधि के अनुरूप, सीडी की भारांकित औसत बढ़ा दर (डब्ल्यूएडीआर) बढ़ गई। वाणिज्यिक पत्रों (सीपी) का औसत पाक्षिक निर्गम भी पिछली तिमाही की तुलना में दूसरी तिमाही में अधिक बना रहा। 'लीजिंग एंड फाइनांस' और विनिर्माण कंपनियां भी सीपी की प्रमुख निर्गमकर्ता बनी रहीं (सारणी V.4)। सीपी का अधिक निर्गम कड़ी चलनिधि स्थिति के कारण वाणिज्यिक क्षेत्र द्वारा वित्त के वैकल्पिक स्रोतों से संसाधन जुटाना दर्शाता है। सीपी में डब्ल्यूएडीआर भी तिमाही के दौरान बढ़ा।

सरकारी प्रतिभूति बाजार

V.10 वर्ष की पहली छमाही के दौरान बाजार उधारों की फ्रंट लोडिंग की नीति दर्शाते हुए, भारत सरकार ने 2010-11 के अपने उधार कार्यक्रम का 63 प्रतिशत भाग पूरा किया और यह सुनिश्चित किया कि वर्ष की दूसरी छमाही में बाहर निकलने की अधिकता न हो जब निजी कर्ज मांग सामान्यतह अधिक होती है। जहां ऋण निर्गम की औसत परिपक्वता 2010-11 के दौरान (सितंबर 2010 तक) बढ़ गई, वहीं भारांकित औसत आय पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में बढ़ गई (सारणी V.5)। राज्यों द्वारा उधार लेने के मामले में, 18 राज्यों ने वर्ष की पहली छमाही के दौरान सकल आधार पर 49,362 करोड़ रुपए जुटाए जो कि 2010-11 की उधार-योजना के तहत 27 राज्यों के सकल विनिधान का 27 प्रतिशत है जबकि 2009-10 की इसी अवधि में यह 53.5 प्रतिशत था।

V.11 3जी/बीडब्ल्यूए नीलामी के बाद बहिर्वाह के कारण बनी चलनिधि की कड़ी स्थिति और नीतिगत दरों में वृद्धि से अल्प और नध्य अवधि की प्रतिभूतियों की आय बढ़ने लगी जबकि सरकारी बाजार उधार में

सारणी V.5: केंद्र और राज्य सरकार की दिनांकित प्रतिभूतियों के निर्गम

	2007-08	2008-09	2009-10	2009-10\$	2010-11\$
1	2	3	4	5	6
केंद्र सरकार					
जुटाई गई सकल राशि (करोड़ रु.)	1,56,000	2,61,000	4,18,000	2,95,000	2,84,000
प्राथमिक व्यापारियों पर भार (करोड़ रुपए)	957	10,773	7,219	6,050	3,563
बिड-कवर अनुपात (दायरा)	1.6-4.8	1.2-4.5	1.4-4.3	1.4-3.6	1.4-3.9
भारत औसत परिपक्वता (वर्ष)	14.9	13.8	11.2	10.9	11.3
भारत औसत प्रतिफल (प्रतिशत)	8.1	7.7	7.2	7.1	7.8
राज्य सरकार					
जुटाई गई सकल राशि (करोड़ रु.)	67,779	1,18,138	1,31,122	63,212	49,362
कट-ऑफ प्रतिफल	7.9-8.9	5.8-9.9	7.0-8.6	7.0-8.4	8.1-8.6
भारत औसत प्रतिफल (प्रतिशत)	8.3	7.9	8.1	7.9	8.3

\$: 30 सितंबर तक.

कमी आने की संभावना के चलते दूसरी तिमाही के दौरान दीर्घावधि संदर्भ में कमी आ गई।

V.12 राजकोषीय घाटे के वित्तपोषण के लिए अब तक जुटाए गए अन्य अतिरिक्त राजस्व और राजकोषीय समेकन की आवश्यकता को ध्यान में लेते हुए, भारत सरकार के निवल बाजार उधार 2010-11 की दूसरी छमाही के लिए जारी सांकेतिक उधार-कैलेंडर के अनुसार 10,000 करोड़ रुपए कम किए गए। बाजार सहभागियों की मांग पद्धति और विभिन्न अवधिपूर्णताओं की प्रतिभूतियों के निर्गम की गुंजाइश के आधार पर, दिनांकित प्रतिभूतियों की अवधिपूर्णता प्रोफाइल कैलेंडर में बढ़ाकर रखी गई है। राज्यों के उधारों के संबंध में, राज्यों के सकल विनिधान का लगभग एक तिहाई भाग दूसरी तिमाही के अंत तक जुटाया गया था। राज्य सरकारों के सुविधाजनक नकदी शेषों और राज्यों द्वारा अब तक अपनाए गए उधार कार्यक्रम को ध्यान में लेते हुए, यह प्रतीत होता है कि चालू वित्तीय वर्ष के दौरान उनके उधारों में कमी आई है। यह अपेक्षित है कि

भारत सरकार और राज्य सरकारों के उधार कार्यक्रमों में अपनायी गई सुविचारित रणनीति इसकी अबाधित पद्धति से पूर्णता सुनिश्चित करेगी।

V.13 91-दिवसीय खजाना बिलों पर आय जून और सितंबर 2010 के बीच 81 आधार अंक बढ़ गई जबकि 182-दिवसीय और 364-दिवसीय खजाना बिलों पर आय इसी अवधि के बीच 110 आधार अंक बढ़ी (सारणी V.6)। भारत सरकार की सुविधाजनक नकदी शेषों की स्थिति को देखते हुए, रिजर्व बैंक ने भारत सरकार के साथ परामर्श करके दूसरी तिमाही के दौरान खजाना बिलों की अधिसूचित राशि कम कर दी। इसके अलावा, 9,614 करोड़ रुपए की राशि सरकार ने तिमाही के दौरान नकदी प्रबंधन परिचालनों के एक भाग के रूप में वापसी खरीद की।

V.14 2010-11 की ति2 के दौरान, सरकारी प्रतिभूति आय सविराम सुगमता के बीच अगस्त 2010 के तीसरे सप्ताह तक सामान्यतः बढ़ी। आय

सारणी V.6 : प्राथमिक बाजार में खजाना बिल				
वर्ष/माह	अधिसूचित राशि (करोड़ रु.)	न्यूनतम कट-ऑफ मूल्य पर औसत निहित प्रतिफल (प्रतिशत)		
		91-दिवसीय	182-दिवसीय	364-दिवसीय
1	2	3	4	5
2008-09	2,99,000	7.10	7.22	7.15
2009-10	3,80,000	3.57	4.00	4.37
2010-11 (30 सितंबर 2010) तक	1,49,500	5.27	5.56	5.74
अप्रैल-10	36,000	4.14	4.64	5.07
मई-10	36,000	4.39	4.76	4.92
जून-10	15,000	5.29	5.31	5.49
जुला-10	13,000	5.51	5.86	5.99
अगस्त-10	33,000	6.15	6.41	6.48
सितंबर-10	16,500	6.10	6.41	6.59

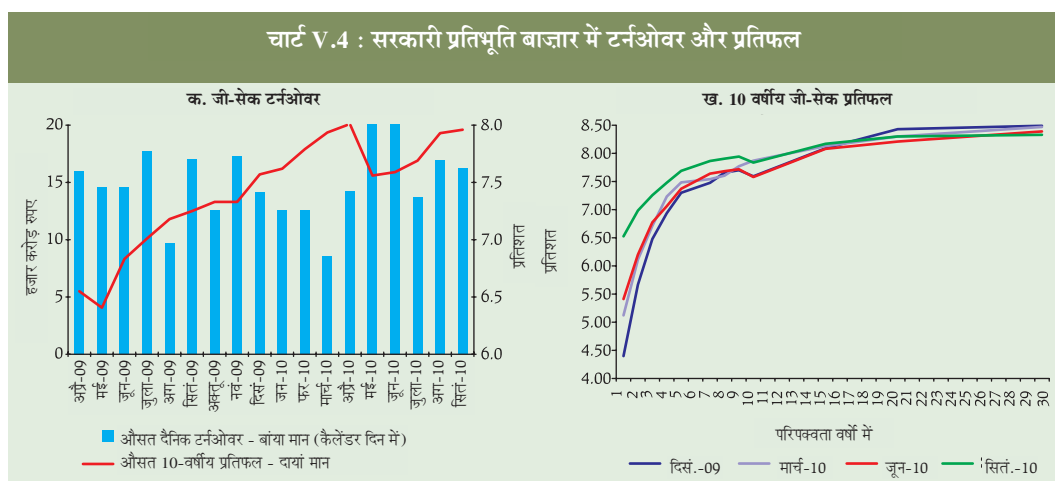
में वृद्धि का मुख्य कारण नीतिगत दरों में वृद्धि, कड़ी चलनिधि स्थिति और उच्च मुद्रास्फीति था। उसके बाद, चलनिधि की स्थिति सुधरने और यूरो क्षेत्र संबंधी चिंता कम हो जाने से उक्त आय कम हो गई। तिमाही-अंत में अग्रिम कर बहिर्वाहों की पृष्ठभूमि में सितंबर मध्य में चलनिधि की स्थिति कड़ी हो जाने के बावजूद, सरकारी बांडों और कंपनी बांडों में एफआईआई के निवेश की सीमा में वृद्धि और चालू राजकोषीय वर्ष

की दूसरी छमाही के उधार कार्यक्रम से कम स्तर से बाजार को बढ़त मिली (चार्ट V.4)। अक्टूबर 2010 माह के दौरान, स्फीतिकारी चिंताओं और कड़ी चलनिधि स्थिति के कारण आय में वृद्धि हुई।

कर्ज बाजार

V.15 सरकारी बांडों की तुलना में कंपनी बांडों पर आय में वृद्धि 2010-11 की ति1 के स्तर की तुलना में 2010-11 की ति2 में और कम हो गई जो आंशिक रूप से वृद्धि की संभावना में सुधार और कम स्फीतिकारी आशंकाओं के कारण कंपनियों के लिए जोखिम की संभावना में गिरावट दर्शाती है (चार्ट V.5.2ग)।

V.16 सुविचारित निकास के रूप में, रिजर्व बैंक ने फरवरी-सितंबर 2010 के दौरान रिपो दर में 125 आधार अंक, रिवर्स रिपो में 175 आधार अंक और सीआरआर में 100 आधार अंक की वृद्धि की। इन नीतिगत बदलावों के प्रतिसाद में, 72 एससीबी ने फरवरी-15 अक्टूबर 2010 के दौरान उनकी जमा



दरें 25-125 आधार अंकों के दायरे में बढ़ाई (सारणी V.7)। उधार पक्ष में, एससीबी की बेंचमार्क मूल उधार दर (बीपीएलआर) जुलाई 2009 और जुलाई 2010 के बीच अपरिवर्तित रही। उसके बाद, अनेक एससीबी ने जुलाई-सितंबर 2010 के दौरान उनकी बीपीएलआर 25-125 आधार अंकों के दायरे में बढ़ाई।

V.17 नीतिगत दरों में वृद्धि के अनुरूप, अनेक बैंकों ने उनकी आधार दरें अक्टूबर 2010 तक 10-150 आधार अंक बढ़ाई। कुल बैंक कर्ज में 94 प्रतिशत हिस्से वाले 53 बैंकों ने उनकी आधार दरें बैंकों द्वारा घोषित आधार दरों के अनुरूप 7.50-8.50 प्रतिशत के दायरे में निर्धारित कीं।

विदेशी मुद्रा बाजार

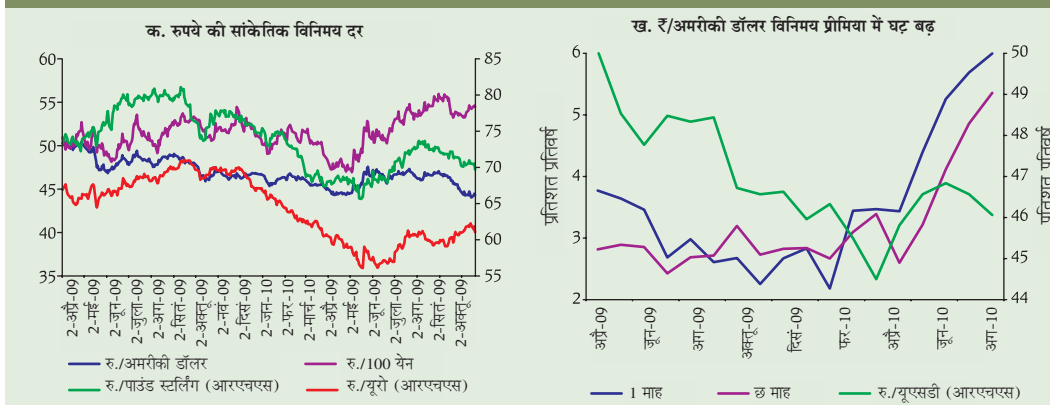
V.18 भारतीय रुपए नए 2010-11 की ति2 के दौरान प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मुद्राओं के प्रति दोतरफा गतिविधि दर्शाई। अमरीकी डॉलर के प्रति इसमें मूल्यवृद्धि हुई जबकि पाउंड स्टर्लिंग, यूरो और जापानी येन के प्रति इसमें मूल्यहास हुआ। तिमाही के दौरान, रुपए ने अमरीकी डॉलर के प्रति जुलाई 2010 के तीसरे सप्ताह तक मूल्यहास की प्रवृत्ति दर्शाई और उसके बाद अगस्त 2010 के दौरान सामान्यतः दायराबद्ध बना रहा। पूंजी अंतर्वाहों में तेजी आने और वृद्धि संभावना बढ़ने से रुपए में सितंबर 2010 के पहले सप्ताह से सामान्यतः मूल्यवृद्धि हुई (चार्ट V.5क)। 1-माह और 3-माह वाला फार्वर्ड प्रीमिया तिमाही के दौरान बढ़ गया (चार्ट V.5ख)।

सारणी V.7 बैंकों की जमा और उधार दरें

सारणी V.7 बैंकों की जमा और उधार दरें					
(प्रतिशत)					
	सितंबर 2009	दिसंबर 2009	मार्च 2010	जून 2010	15 अक्टूबर 2010
1	2	3	4	5	6
1. देशी जमा दर					
<i>सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक</i>					
1 वर्ष तक	1.00-7.00	1.00-6.25	1.00-6.50	1.00-6.25	1.00-7.00
> 1-3 वर्ष	6.50-8.00	6.00-7.25	6.00-7.25	6.00-7.25	7.00-7.75
> 3 वर्ष	7.00-8.50	6.25-7.75	6.50-7.75	6.50-7.75	7.00-8.00
<i>निजी क्षेत्र के बैंक</i>					
1 वर्ष तक	2.00-7.50	2.00-6.75	2.00-6.50	2.00-6.50	2.50-7.25
> 1-3 वर्ष	6.00-8.75	5.25-7.50	5.25-7.75	6.25-7.50	6.50-8.25
> 3 वर्ष	6.00-9.00	5.75-8.00	5.75-8.00	6.50-8.00	6.50-9.00
<i>विदेशी बैंक</i>					
1 वर्ष तक	1.80-8.00	1.25-7.00	1.25-7.00	1.25-7.00	1.25-7.30
> 1-3 वर्ष	2.25-8.50	2.25-7.75	2.25-8.00	3.00-8.00	3.00-8.00
> 3 वर्ष	2.25-9.50	2.25-8.50	2.25-8.75	3.00-8.50	3.00-8.25
2. बेंचमार्क मूल उधार दर					
1. सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक	11.00-13.50	11.00-13.50	11.00-13.50	11.00-13.50	7.50-8.50#
2. निजी क्षेत्र के बैंक	12.50-16.75	12.50-16.75	12.50-16.75	12.50-16.75	7.00-9.00#
3. विदेशी बैंक	10.50-16.00	10.50-16.00	10.50-16.00	10.50-16.00	5.50-9.00#
3. वास्तविक उधार दर*					
1. सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक	3.50-17.50	3.25-18.00	3.25-18.00	3.25-18.00	-
2. निजी क्षेत्र के बैंक	4.10-26.00	3.50-25.84	3.00-28.00	2.80-26.00	-
3. विदेशी बैंक	2.76-25.50	3.50-22.00	3.60-23.00	3.60-25.00	-

* : 2 लाख रुपए से अधिक के निर्यातित मांग और सावधि ऋण पर ब्याज दर, दोनों छोर की अंतिम 5 प्रतिशत उधार दरों को छोड़कर।
आधार दर प्रणाली ने 1 जुलाई 2010 से बीपीएलआर प्रणाली की जगह ले ली।

चार्ट V.5 : विनिमय दरें



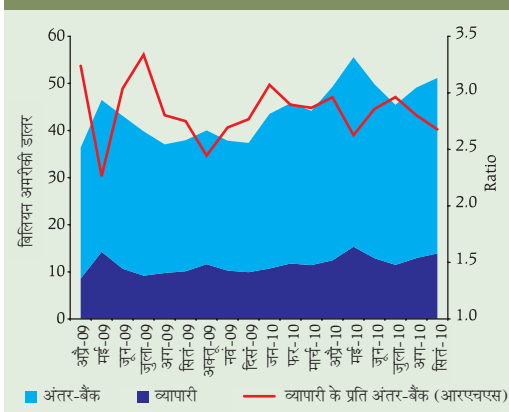
V.19 विदेशी मुद्रा बाजार का वणिक खंड और अंतर बैंक पण्यार्वत जुलाई 2010 के दौरान कम हो गया और उसके बाद अगस्त 2010 से उसमें सुधार हुआ (चार्ट V.6)।

इक्विटी और आवास बाजार

V.20 इक्विटी में मजबूत एफआइआइ निवेश के आधार पर जुलाई-सितंबर के दौरान शेयरों ले मूल्य में तेजड़िया प्रवृत्ति बनी रही। भारत ने अन्य ईएमई के

साथ मजबूत संविभागीय अंतर्वाह का अनुभव किया क्योंकि इन देशों और उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के बीच ब्याज दर अंतर काफी लाभदायक हो गया था। भारतीय बाजार में मजबूत समष्टिआर्थिक आधार तत्व, औद्योगिक और सेवा क्षेत्र में तेजी और साथ ही कृषि क्षेत्र का अपेक्षित बेहतर निष्पादन एफआइआइ अंतर्वाहों के कुछ प्रमुख कारण थे। सितंबर 2010 के अंत में, सेंसेक्स और निफ्टी दोनों ने मार्च 2010 की तुलना में क्रमशः 14.5 प्रतिशत और 14.9 प्रतिशत लाभ दर्ज किया (सारणी V.8)।

चार्ट V.6: विदेशी मुद्रा बाजार में दैनिक औसत टर्नओवर



V.21 देशी पूंजी बाजार के प्राथमिक खंड में गतिविधियां अप्रैल-सितंबर 2010 के दौरान लगातार तेजी के संकेत दे रही थीं। सार्वजनिक निर्गमों से जुटाए गए संसाधन अप्रैल-सितंबर 2010 के दौरान पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में कुछ बढ़े (सारणी V.9)। निजी स्थानन के माध्यम से जुटाए गए संसाधन (92,787 करोड़ रुपए) भी अप्रैल-जून 2010 के दौरान 20.5 प्रतिशत बढ़े। पारस्परिक निधियों द्वारा जुटाए गए संसाधन पिछले

सारणी V.8 : स्टॉक बाजार के प्रमुख संकेतक

संकेतक	बीएसई				एनएसई			
	2008-09	2009-10	2009-10 (अप्रै.-सितं.)	2010-11 (अप्रै.-सितं.)	2008-09	2009-10	2009-10 (अप्रै.-सितं.)	2010-11 (अप्रै.-सितं.)
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1. बीएसई सेंसेक्स/एसएण्डपीसीएनएक्स निफ्टी								
(i) अंत-अवधि	9709	17528	17127	20069	3021	5249	5084	6030
(ii) औसत	12366	15585	14298	17866	3731	4658	4284	5361
2. घटबढ़ का सहगुणांक	24.2	11.9	12.5	4.9	23.2	11.3	11.6	4.9
3. मूल्य-अर्जन अनुपात (अंत-अवधि)*	13.7	21.3	22.2	23.8	14.3	22.3	22.9	25.5
4. मूल्य-बही मूल्य अनुपात	2.7	3.9	4.1	3.8	2.5	3.7	3.8	3.8
5. जीडीपी के प्रति बाजार पूंजीकरण का अनुपात (प्रतिशत)@	55.4	98.9	91.6	102.7	52.0	96.4	85.9	100.3

*: बीएसई सेंसेक्स में शामिल 30 स्क्रिप तथा एसएण्डपी सीएनएक्स निफ्टी में शामिल 50 स्क्रिप पर आधारित।

@: अंत-अवधि में।

स्रोत : बंबई स्टॉक एक्सचेंज लिमिटेड (बीएसई) तथा नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया लिमिटेड (एनएसई)।

वर्ष की तुलना में अप्रैल-सितंबर 2010 के दौरान कम थे जिसका कारण कड़ी चलनिधि स्थिति और बैंकों तथा कंपनियों द्वारा 3जी/बीडब्ल्यूए नीलामी के लिए पारस्परिक निधियों से धन वापस लेना था।

V.22 अप्रैल-अक्टूबर 2010 के दौरान एफआइआइ निवल क्रेता और पारस्परिक निधियां निवल विक्रेता बनीं। भारतीय इक्विटी में निवल

एफआइआइ निवेश, जो कि अप्रैल-जून 2010 में कम था, जुलाई-अक्टूबर 2010 के दौरान बढ़ गया जो भारतीय अर्थव्यवस्था की मजबूत वृद्धि संभावना और वैश्विक चलनिधि स्थिति में सुधार से प्रेरित था (चार्ट V.7क)। शेयर बाजार में एफआइआइनिवेश से बाजार की स्थिति में तेजी आ गई और नकदी तथा डेरिवेटिव खंड का पण्यवर्त बढ़ गया (चार्ट V.7ख)।

सारणी V.9: पूंजी बाजार से संसाधन जुटाना

(करोड़ रुपए)

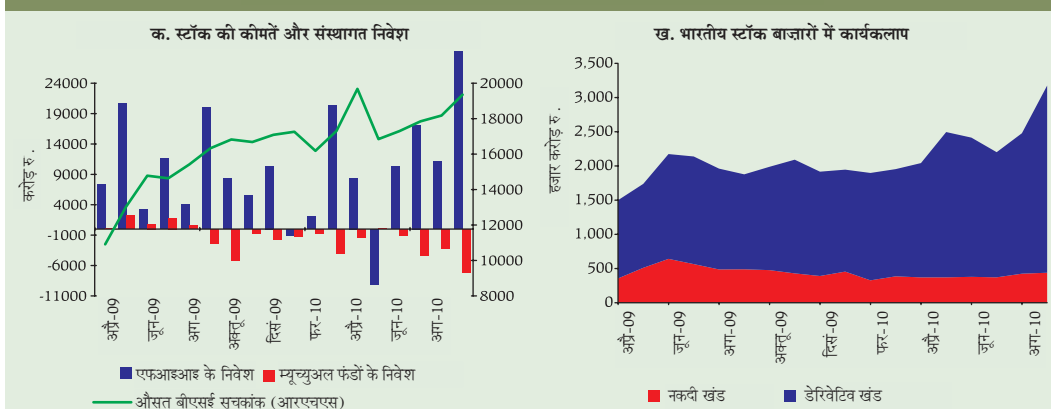
वर्ग	2008-09 (अप्रै.-मार्च)	2009-10 (अप्रै.-मार्च)	2009-10 (अप्रै.-सितं.)	2010-11 (अप्रै.-सितं.)
1	2	3	4	5
अ. प्रॉस्पेक्टस तथा राइट निर्गम*	14,671	32,607	13,617	14,058
1. निजी क्षेत्र (क+ख)	14,671	25,479	6,814	13,475
क) वित्तीय	466	326	0.00	3,420
ख) गैर वित्तीय	14,205	25,153	6,814	10,055
2. सार्वजनिक क्षेत्र	-	7,128	6,803	583
आ. यूरो निर्गम	4,788	15,967	12,645	7,443
इ) म्यूच्युअल फंड द्वारा संग्रहण (निवल)@	-28,296	83,080	1,12,427	-452
1. निजी क्षेत्र	-34,017	54,928	83,864	18,744
2. सार्वजनिक क्षेत्र #	5,721	28,152	28,563	-19,196

*: बिक्री के प्रस्ताव को छोड़कर @: चुकौतियों को छोड़कर #: यूटीआइ म्यूच्युअल फंड सहित

टिप्पणी : आंकड़ों में फंड ऑफ फंड्स स्कीम के तहत जुटाई गई निधियां शामिल नहीं हैं।

स्रोत : म्यूच्युअल फंड संबंधी आंकड़े भारतीय प्रतिभूति विनियम बोर्ड से लिए गए हैं।

चार्ट V. 7 : स्टॉक की कीमतों और टर्नओवर में घटबढ़

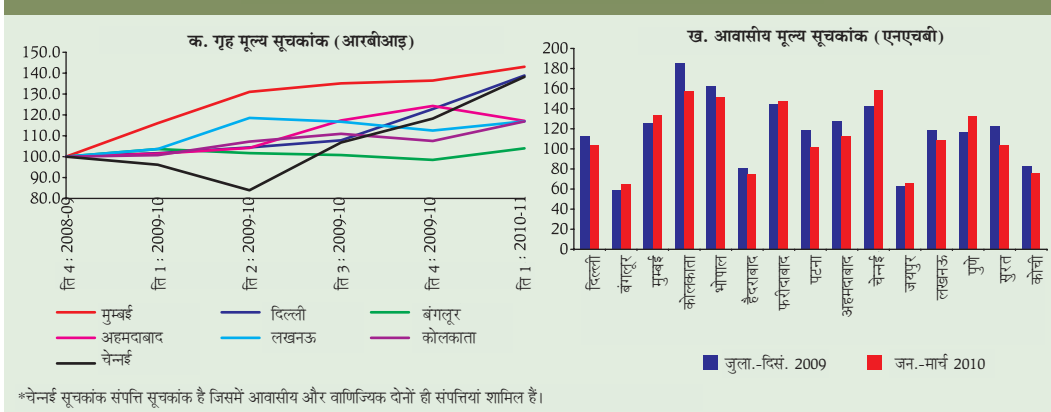


V.23 पंजीयन और स्टैम्प विभाग (डीआरएस) से प्राप्त आंकड़ों पर आधारित विभिन्न केंद्रों के तिमाही गृह मूल्य सूचकांक (एचपीआइ) से पता चलता है कि संपत्ति के मूल्य टियर I के अधिकांश शहरों में बढ़ रहे हैं, हालांकि टियर II के शहरों में इसमें कमी आई है (चार्ट V.8क)। इन आंकड़ों के अनुसार, मुंबई में पिछली तीन तिमाहियों में मूल्य मंद गति दर्शा रहे हैं जबकि दिल्ली में मूल्य तेज गति से बढ़ रहे हैं जो कि आंशिक रूप से राष्ट्रमंडल खेलों संबंधी गतिविधि

दर्शाते हैं। मुंबई में लेनदेन, जो कि 2009-10 की ति3 में तेजी से बढ़े थे, शीर्ष पर पहुंचे प्रतीत होते हैं। बंगलुरु में आवासीय मूल्य वृद्धि के कुछ चिह्न दर्शा रहे हैं जो कि पिछले लगभग डेढ़ वर्ष से स्थिर बने हुए थे। यह प्रवृत्ति एनएचबी आवासीय मूल्य सूचकांक की प्रवृत्ति के अनुरूप थी (चार्ट V 8ख)।

V.24 वैश्विक बाजारों में जोखिम का बढ़ता संदेह और अनिश्चितता ने दो भिन्न माध्यमों, नामतः भारतीय

चार्ट V. 8 : आवासीय बाजारों की प्रवृत्तियां



*चेन्नई सूचकांक संपत्ति सूचकांक है जिसमें आवासीय और वाणिज्यिक घेनों ही संपत्तियां शामिल हैं।

रुपए की मूल्यवृद्धि का दबाव और संविभागीय प्रवाहों में तेज वृद्धि के कारण इक्विटी मूल्यों में वृद्धि, से भारतीय बाजारों को प्रभावित किया। वैश्विक बाजारों में अनिश्चितता के बावजूद, देशी बाजार सामान्य रूप से कार्यरत रहे जिसमें मात्रा स्थिर थी और अस्थिरता कम थी। उच्च नीतिगत दरों का अंतरण सीडी, सीपी के अधिक निर्गम और साथ ही खजाना बिलों तथा सरकारी प्रतिभूतियों और जमाराशि पर भी अधिक प्रतिलाभ से दिख रहा था। उधार दरें भी अंतराल के

बाद बढ़ने लगीं। आधार दर माहौल में, कंपनियों द्वारा सीपी बाजार पर निर्भरता बढ़ाने के चिह्न दिख रहे थे। बैंकों ने भी व्यापक जमाराशि जुटाने के लिए सीडी माध्यम को उपयोग में लाया। अल्पावधि में ईएमई को संविभागीय प्रवाह में संभाव्य भारी वृद्धि को देखते हुए, विनिमय दर और आस्ति मूल्यों पर होने वाले उनके प्रभाव पर सूक्ष्म दृष्टि रखनी होगी क्योंकि देशी मुद्रास्फीति और बाह्य प्रतिस्पर्धात्मकता पर उनका असर होता है।